बच्चों के लिए कुछ किताबें

❑ कमलेश चन्द्र जोशी

बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों से इतर कितनी और कैसी पुस्तकें हैं, इस पर बात करते हुए अक्सर हिन्दी में बाल साहित्य की दरिद्रता का रोना रोया जाता है । लेकिन बाल साहित्य पर गंभीर विमर्श लगभग नहीं के बराबर है जबकि यह ऐसा क्षेत्र है जहां शिक्षाविद् और रचनाकारों (लेखक, चित्रकार, अनुवादक) का सहकार और संवाद बहुत जरूरी है - । इस दिशा में नेशनल बुक ट्रस्ट (नयी दिल्ली) करीब-करीब एकाकी प्रयास में लगा है । देश के इस शीर्ष प्रकाशन द्वारा छपी बच्चों की किताबों की कतिपय गंभीर सीमाएं इस टिप्पणी में उजागर होती हैं ।

प्यारे पिताजी

बच्चों के लिए अच्छे उपन्यासों की कमी हमेशा से ही महसूस की जाती रही है । अकसर यह भी सुनने को मिलता है कि बड़ी आयु के बच्चे (दस वर्ष से ऊपर) जासूसी/रहस्य कथाएं पढ़ना ज्यादा पसंद करते हैं । हालांकि यह बहस का मुद्दा हो सकता है कि बच्चे कैसी किताबें पढ़ना चाहते हैं ? हम मानते हैं कि हर एक बच्चे की रुचियां-अभिवृत्तियां अलग-अलग होती हैं । यहां पर हम हाल ही में प्रकाशित तथा किशारों की दुनिया को चित्रित करने वाले बाल-उपन्यास 'प्यारे पिताजी' पर सबसे पहले रोशनी डालेंगे । इस बाल-उपन्यास को पढ़ते हुए जो सबसे महत्वपूर्ण बात उभरती है, वह है किताब में बच्चों के लिए रोचकता व रहस्य का पुट । दूसरी बात यह है कि सीधा-साधा उपन्यास जिसे बड़े धीरज ओर सलीके के साथ बुना गया है । इसमें हमें कृत्रिमता का आभास

प्यारे पिताजी
लेखक - भवेन्द्रनाथ सैकिया
अनुवाद - नवारुण वर्मा
चित्रांकन - शुद्धसत्व बसु
मूल्य - 15 रुपये

नहीं होता है। इसको पढ़ते हुए लगता है कि कहानी धीरे-धीरे सहज रूप से गति पकड़ रही है ।

इस किताब का मुख्य पात्र है - विपुल नाम का लड़का, जो अपने माता-पिता का कहना नहीं मानता । पढ़ना लिखना छोड़कर वह गलत संगत में पड़ जाता है । इसके अलावा वह घर के लोगों से भी उदण्डता से पेश आता है । उसके पिता उससे बहुत परेशान रहते हैं । वे उसको सुधारना चाहते हैं। इसी सुधारने की प्रक्रिया के आधार पर ही कहानी का पूरा ताना-बाना बुना गया है । इस कहानी में डाक्टर, पुलिस, सी.आई.डी वाले भी आते हैं जिससे कहानी में एक तनाव बना रहता है । यह 'तनाव' ही बच्चों के मन में रोचकता बनाये रखता है जिससे उनका किताब को पूरा पढ़े बिना छोड़ने का मन नहीं करता ।

इस बाल उपन्यास के बारे में हम एक मत से कह सकते हैं कि यह बच्चों की एक स्वस्थ्य एवं रोचक किताब है । इसमें आम बम्बईया फिल्मों व सस्ती किताबों जैसी अति नाटकीयता कहीं नहीं नजर आती है जो बच्चों को झूठे भ्रम में डाले रहती है । कहानी में एक ढील नजर आती है । जब डाक्टर व नर्स के संवादों को हम पढ़ते हैं । इनसे हमें कहानी के क्लू मिलते हैं । इस क्लू को पकड़ते हुए हम कहानी के क्लाईमेक्स पर पहुंचते हैं । जहां नजर आते हैं प्यारे पिताजी । इस जगह पर नाटकीयता हावी रहती है जैसे कि सब कुछ बहुत जल्दी ठीक हो गया हो । किताब की इस ढील को हम दो तरह से विश्लेषित कर सकते हैं । जहां बच्चे कयास लगाना शुरू कर देते हैं । इस कयास को हम बच्चों की दुनिया के परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह बच्चों की मौलिक कल्पनाशीलता को बढ़ावा देती है जिसके अन्तर्गत वे मन ही मन अपने तर्क गढ़ते हैं। दूसरे बिन्दु से सोचें तो यह कहानी की बुनावट में एक ढीलेपन का आभास भी देती है। यहां पर हमें तय करना होता है कि हम किस बिन्दु को तवज्जो देते हैं ।

किताब में सादे चित्र शुद्धसत्व बसु ने बनाये हैं जो कहानी की घटनाओं को अर्थ देने में सक्षम है। किताब के ये चित्र इसकी सादगी को भी इंगित करते हैं। यह पुस्तक असमिया के प्रसिद्ध लेखक भवेन्द्र नाथ सैकिया की लिखी हुई है । इसका हिन्दी अनुवाद

नवारूण शर्मा ने किया है । पुस्तक का मूल्य है 15 रुपये जो कि अधिक नहीं लगता । पुस्तक के प्रकाशक हैं नेशनल बुक ट्रस्ट नयी दिल्ली ।

अंत में हम यह कह सकते हैं, जब एक जासूसी या रहस्य कथा लिखी जाती हैं तब बेहद जरूरी होता है कि घटनाक्रम को इस तरह से विकसित किया जाये कि पाठक को पता ही न चले कि क्या होने वाला है । लेकिन अक्सर होता यह है कि पाठक को उलझाने के चक्कर में लेखक कहीं न कहीं मात खा जाते हैं तथा स्वयं उलझ जाते हैं । मात खाते ही कहानी के साथ न्याय नहीं कर पाते हैं। लेकिन तब यह कहने में हमें संकोच नहीं कि यह पुस्तक बच्चों की स्वस्थ्य पुस्तकों की शृंखला में एक इजाफा और करती है ।

चुनमुन आजाद है

बच्चों के लिए एक साफ सुथरे फ्रेम में बनी पुस्तक 'चुनमुन आजाद है', हाल ही में छप कर आयी है । यहां पर साफ सुथरे को दो अर्थों में ग्रहण करना चाहिये । पहला अर्थ तो हम इस तरह से निकाल सकते हैं कि जो कहानी बच्चों को कुछ सीख दे जाय । चाहे वह भाव उभरकर न आया हो लेकिन यह भाव एक छिपे संदेश के रूप में विद्यमान रहता है। यहां पर पक्षियों के प्रति दयालुता का भाव है। यह भी लिखने का एक ढंग होता है अपनी बात को थोड़ा सलीके से कहना । लेकिन बच्चों के लिए हमें अपनी बात रखने के लिए यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि इसमें रोचकता का पुट हो । वह भी बच्चों के रोजमर्रा के जीवन का जीवन्त अनुभव। तब बात बनती है ।

चुनमुन आजाद है
लेखक - कमलेश मोहिन्द्रा
चित्रांकन - आशीष सेनगुप्ता
मूल्य - 10 रुपये

दूसरे साफ-सुथरे का अर्थ हम इस संदर्भ में लेंगे, जब हम बच्चों के लिए लिखते हैं तो शायद हम पहले सोच लेते हैं कि कहानी के चरित्र क्या करेंगे ? क्या बोलेंगे ? जैसे कि इस पुस्तक में गब्बू कुत्ता और मानो बिल्ली के चरित्र इसी तरह के प्रतीत होते हैं । हम इसी तरह कहानी का अंत तक भी निश्चित किये रहते हैं। हमें लगता है ऐसी कहानियों में हर चीज निश्चित है । ऐसी कहानियां हमें स्थिरता का आभास कराती हैं । इस किताब का पहला पैराग्राफ पढ़ते ही हम इसका अंत निश्चित कर सकते हैं । यहां पर कहने का मूल अर्थ यह है कि एक फ्रेम में सेट कहानी । ऐसी कहानियां हम दर्जनों पढ़ चुके होंगे । ये कहानियां शायद बच्चों को एक नये अनुभव से परिचित नहीं करा पातीं । कहानी का सार देखें -

सुमी अपनी मम्मी के साथ घूमने गयी । वहां नाली के पास उसको चिड़िया का एक बच्चा मिला। उसकी एक टांग की हड्डी टूटी हुयी थी। .....बाकी का अंदाजा आप लगायें और सोचें कि सुमी ने चुनमुन चिड़िया के लिए आगे क्या किया होगा ?

किताब में रंग-बिरंगे चित्र हैं जो कहानी के पाठ्य को सुसज्जित करते हैं । आशीष सेन गुप्ता द्वारा बनाये गये ये चित्र बच्चों को अच्छे लग सकते हैं ।

मेरी बहन नेहा

कहते हैं कि बच्चों के अनुभवों को संजोकर लिखी गयी रचना उनके लिए रोचक बन जाती है । अभी हाल ही में एक किताब छप कर आयी है - 'मेरी बहन नेहा' । इस किताब का मुख्य पात्र है प्रीति नाम की एक लड़की । प्रीति की मां अस्पताल में है । प्रीति सोचती है कि उसकी मां बीमार है। लेकिन उसे अपने साथियों से पता चलता है कि अस्पताल में बच्चे मिलते हैं । उसकी सहेली रीतू कहती है कि तेरी मां तेरे लिए बहन लायेगी अस्पताल से । कहानी में प्रीति की बहन नेहा पैदा होती है । फिर नेहा की कुछ शिशु गतिविधियों को उभारा गया है । जैसे नेहा 'बाऊ-उवाऊ' बोलती है । नेहा रोती है - 'उवां-उवां' । नेहा मुस्काती है आदि । ये गतिविधियां बच्चों को पुलकित करती हैं ।

कुल मिलाकर कह लें किताब में बच्चों के घर में एक नये बच्चे के आने का अनुभव रखा गया है । बच्चों के लिए जब हम लिखते हैं तो पहली शर्त यह है कि रचना बच्चों के अनुभवों से जनित हो । इस शर्त को किताब पूरा करती है लेकिन इस शर्त के साथ हमें यह भी समझना चाहिए कि इन अनुभवों को हम किस तरह रोचक ढंग से लिखें जो बच्चों के दिलों को छू जाये। यहां पर हमें महसूस होता है कि कहानी कमजोर पड़ जाती है । यह कहानी बहुत सरल ढंग से लिखी गयी है । कहीं-कहीं पर शब्दों से खेलकर रोचकता को उभारने का प्रयास किया गया है, देखें -

पापा ने मुझे परांठे दिए और खूब सारा

अचार। और दूध पीने की जिद भी नहीं की । मेरे पापा। अच्छे पापा ।

मेरी बहन नेहा
लेखिका - मधु बी. जोशी
चित्रांकन - पार्थ सेनगुप्ता
मूल्य - 7 रुपये ।

इसी तरह,

दोपहर में पापा ने पुलाव बनाया, ढेर सारे मटर डालकर । मैनें खूब सारा गाजर का हलवा भी खाया।

अंत में हम कह सकते हैं कि, बच्चों की यह एक सामान्य पुस्तक है जो बच्चों के पुस्तकालय में अपना नाम जोड़ती है । बस।

किताब के चित्र पार्थ सेनगुप्ता ने बनाये हैं जो कहानी के मनोभावों को व्यक्त करने में सक्षम है । लेकिन बाल पाठकों पर ये चित्र कितना प्रभाव डाल पायेंगे ? इस बारे में कुछ भी कह पाना मुश्किल है।

हां, किताब के बारे में यह बात कहना जरूरी लगता है कि यह हिन्दी की मौलिक रचना है । किसी अन्य भाषा से अनुवाद नहीं है । जबकि अक्सर देखा जाता है कि नेशनल बुक ट्रस्ट अधिकतर अनुवाद ही छापता है । हो सकता है कि प्रकाशक को अच्छी पांडुलिपियां नहीं मिल पाती हों लेकिन इसके लिए प्रयास किये जाने चाहियें।

बिरजू और उड़ने वाला घोड़ा

बच्चों के कथा साहित्य में कल्पना का महत्वपूर्ण स्थान है। कल्पना बच्चों को सोचने का मौका देती है । यह बात सौ फीसदी सच है । लेकिन यहां पर इस बात की पड़ताल करनी जरूरी है कि हम कल्पना करके कहानी के माध्यम से क्या बताना चाह रहे हैं ? कहीं ऐसा तो नहीं कि किताब की काल्पनिक दुनिया जिससे बच्चों का अनुभव ही मेल नहीं खाता अथवा यह दुनिया ऐसी तो नहीं जहां सब कुछ कोरा है। वहां बच्चा अपना तर्क ही नहीं रख पा रहा है क्योंकि वहां जीवन की सच्चाई नहीं है । केवल एक काल्पनिक दुनिया । इस दुनिया को बच्चे की नजर से देखें तो उन्हें शायद यह पढ़ने का आधा-अधूरा सुख दे सकती है। लेकिन पढ़ने का सच्चा सुख नहीं। ऐसी ही कुछ बात है। बच्चों की नई किताब - 'बिरजू और उड़ने वाला घोड़ा' में ।

इस किताब की कहानी बच्चों को एक लकड़ी के घोड़े की बिरजू को अपने ऊपर बैठाकर सैर कराने की बात बताती है। इस कहानी का कथानक कुछ-कुछ पुराने किस्सों व ग्रीक मिथकों से मेल खाता है जिसमें एक राजकुमार चारों दिशाओं में जाता है। वहां उसे एक बुढ़िया मिलती है। बुढ़िया उसे कुछ बात बताती है। वह दूसरी दिशा में जाता है । जहां उसे फिर कोई मिलता है । वह उसे तीसरी दिशा में जाने को कहता है । इस तरह से कहानी आगे बढ़ती है और राजकुमार को सभी दिशाओं में जाना होता है । यहां पर यही राजकुमार बिरजू के रूप में मौजूद है। बिरजू गरीब माता-पिता का लंगड़ा बेटा है । लेकिन मेहनती है। अपनी मेहनत के बल पर वह कई फल प्राप्त करता है और अपने घर के जीवन को सुखमय बनाता है । कुल मिलाकर एक पारम्परिक कहानी जिसे नये संदर्भ में रखने की कोशिश की गई है । हां, इस कहानी से एक आभास होता है कि एक विकलांग बच्चे की उम्मीदों को रंग देने

बिरजू और उड़ने वाला घोड़ा
लेखिका - दीपा अग्रवाल
अनुवाद - मोहिनी राव
चित्रांकन - सुबीर राय
मूल्य - 8 रुपये

का अच्छा प्रयास किया गया है । लेकिन यहां पर जरूरत इस बात की भी रहती है कि कल्पना को वास्तविक रूप देने के लिए हमें सच्चे अनुभवों का सहारा लेना पड़ता है । तब शायद रचना जीवन्त बनती है । किताब के चित्र सुबीर राय ने बनाये हैं जो बच्चों के मनोभावों से मेल खाते हैं । आशा है, बच्चों को ये पसंद आयेंगे। किताब की मूल कहानी अंग्रेजी में लिखी गयी है । यह इसका हिन्दी अनुवाद है। ◆

इन सभी पुस्तकों के प्रकाशक नेशनल बुक ट्रस्ट ए-5, ग्रीनपार्क नई -दिल्ली -16.